International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor = 7.938, July-December 2024, Submitted in December 2024, ISSN -2393-8048

गणेश पुराण का सांस्कृतिक अध्ययन

शिखा जोशी, शोधार्थी, टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर
डॉ. ममता गुप्ता, सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

प्रस्तावित शोध की भूमिका

बहुत प्राचीन समय की बात है कि एक बार नैमिशारण्य में कथाकार सूतजी पधारे। उन्हें आया देखकर वहां रहने वाले ऋषि मुनियों ने उनका अभिवादन किया। अभिवादन के बाद सभी ऋषि– मुनि अपने–अपने आसन पर बैठ गए तब उन्हीं में से किसी एक ने सूतजी से कहा–''हे सूत जी ! आप लोक और लोकोत्तर के ज्ञान–ध्यान से परिपूर्ण कथा वाचन में सिद्धहस्त है। हमारा आप से निवेदन है कि आप हमें हमारा मंगल करने वाली कथाएँ सुनायें।'' ऋषि–मुनियों से आदर पाकर सूतजी बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा–''आपने जो मुझे आदर दिया है वह सराहनीय है। मैं यहां आप लोगों को परम कल्याणकारी कथा सुनाऊंगा।'' सूतजी ने कहा–''बह्मा, विष्णु, महेश, ब्रह्म के तीन रूप हैं। मैं स्वयं उनकी शरण में रहता हूँ। यद्यपि विष्णु संसार पालक हैं और वह ब्रह्मा की उत्पन्न की गयी सृष्टि का पालन करते हैं। ब्रह्मा ने ही सुर–असुर, प्रजापति तथा अन्य यौनिज और अयौनिज सृष्टि की रचना की है। रुद्र अपने सम्पूर्ण कल्याणकारी कृत्य से सृष्टि के परिवर्तन का आधार प्रस्तुत करते हैं। पहले तो मैं तुम्हें बताऊंगा कि किस प्रकार प्रजाओं की सृष्टि हुई और फिर उनमें सर्वश्रेष्ठ देव भगवान गणेश का आविर्भाव कैसे हुआ। भगवान ब्रह्मा ने जब सबसे पहले सृष्टि की रचना की तो उनकी प्रजा नियमानुसार पथ में प्रवृत्ति नहीं हुई। वह सब अलिप्त रह गए। इस कारण ब्रह्मा ने सबसे पहले तामसी सृष्टि की, फिर राजसी। फिर भी इच्छित फल प्राप्त नहीं हुआ। जब रजोगुण ने तमोगुण को ढक लिया तो उससे एक मिथुन की उत्पत्ति हुई। ब्रह्मा के चरण से अधर्म और शोक से इन्सान ने जन्म लिया। ब्रह्मा ने उस मलिन देह को दो भागों में विभक्त कर दिया। एक पुरुष और एक स्त्री। स्त्री का नाम शतरूपा हुआ। उसने स्वयंभू मनु का पति के रूप में वरण किया और उसके साथ रमण करने लगी। रमण करने के कारण ही उसका नाम रति हुआ। फिर ब्रह्मा ने विराट का सृजन किया। तब विराट से वैराज मनु की उत्पत्ति हुई। फिर वैराज मनु और शतरूपा से प्रियव्रत और उत्तानुपात दो पुत्र उत्पन्न हुए और आपूति तथा प्रसूति नाम की दो पुत्रियां हुईं। इन्हीं दो पुत्रियों से सारी प्रजा उत्पन्न हुई। मनु ने प्रसूति को दक्ष के हाथ में सौंप दिया। जो प्राण है, वह दक्ष है और जो संकल्प है, वह मनु है। मनु ने रुचि प्रजापति को आपूति नाम की कन्या भेंट की। फिर इनसे यज्ञ और दक्षिणा नाम की सन्तान हुई। दक्षिणा से बारह पुत्र हुए, जिन्हें यम कहा गया। इनमें श्रद्धा, लक्ष्मी आदि मुख्य हैं। इनसे फिर यह विश्व आगे विकास को प्राप्त हुआ। अधर्म को हिंसा के गर्भ से निर्कति उत्पन्न हुई और अन्निद्ध नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ। फिर इसके बाद यह वंश क्रम बढ़ता गया। कुछ समय बाद नीलरोहित, निरुप, प्रजाओं की उत्पत्ति हुई और उन्हें रुद्र नाम से प्रतिष्ठित किया गया। रुद्र ने पहले ही बता दिया था कि यह सब शतरुद्र नाम से विख्यात होंगे। यह सुनकर ब्रह्माजी प्रसन्न हुए और फिर इसके बाद उन्होंने पृथ्वी पर मैथुनी सृष्टि का प्रारम्भ करके शेष प्रजा की सृष्टि बन्द कर दी। सूतजी की बातें सुनकर ऋषि–मुनियों ने कहा, ''आपने हमें जो बताया है उससे हमें बड़ी प्रसन्नता हुई है। आप कृपा करके हमें हमारे पूजनीय देव के विषय में बताइये। जो देवता हमें पूज्य हो और उसकी कृपा से हमारे और आगे आने वाली प्रजाओं के कल्याणकारी कार्य सम्पन्न हों।'' ऋषियों की बात सुनकर सूतजी ने कहा कि ऐसा देव तो केवल एक ही है और वह है महादेव और पार्वती के पुत्र श्री गणेश।

हमने मूल पुराणों में कही हुई बातें और शैली यथावत् स्वीकार की है और सामान्य व्यक्ति को भी समझ में आने वाली भाषा का प्रयोग किया है। किन्तु जो तत्त्वदर्शी शब्द हैं उनका वैसा ही प्रयोग करने का निश्चय इसलिए किया गया कि उनका ज्ञान हमारे पाठकों को उसी रूप में हो।

गणेश पुराण महत्वपूर्ण है क्योंकि यह गणपति उपनिषद् के साथ, हिंदू धर्म के गणपति संप्रदाय के दो सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं। गणपति गणेश को अपना प्राथमिक देवता मानते हैं, और इस पुराण में मिली गणेश की पौराणिक कथा उनकी परंपरा का हिस्सा है। यह पाठ इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह गणेश से संबंधित है, जो हिंदू धर्म में सबसे अधिक पूजे जाने वाले देवता हैं, और सभी प्रमुख हिंदू परंपराओं, जैसे शैववाद, वैष्णववाद, शक्तिवाद और स्मार्तवाद द्वारा शुरुआत के देवता के रूप में प्रतिष्ठित हैं। यह पाठ प्राचीन पौराणिक कथाओं और वेदांतिक परिसर को गणेश भक्ति ढांचे में एकीकृत करता है

यह पाठ बौद्ध धर्म और जैन धर्म के इतिहास के लिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि गणेश उनकी पौराणिक कथाओं और धर्मशास्त्र में भी पाए जाते हैं।

प्रस्तावित शोध के सोपान

18 पुराणो में अलग–अलग देवी देवताओं को केन्द्र में रखकर पाप और पुण्य, धर्म और अधर्म

तथा कर्म और अकर्म की गाथाएं कही गई हैं। उन सबसे एक ही निष्कर्ष निकलता है कि आखिर मनुष्य और इस सृष्टि का आधार–सौंदर्य तथा इसकी मानवीय अर्थवत्ता में कही–न–कहीं सद्गुणों की प्रतिष्ठा होनी ही चाहिए। आधुनिक जीवन में भी संघर्ष की अनेक भावभूमियों पर आने के बाद भी विशिष्ट मानव मूल्य अपनी अर्थवत्ता नहीं खो सकते। त्याग, प्रेम, भक्ति, सेवा, सहशीलता आदि ऐसे मानव गुण हैं जिनके अभाव में किसी भी बेहतर समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। इसलिए भिन्न–भिन्न पुराणों में देवाओं के विभिन्न स्वरूपों को लेकर मूल्य के स्तर पर एक विराट आयोजन मिलता है। एक बात और आश्चर्यजनक रूप में पुराणों में मिलती है कि सत्कर्म की प्रतिष्ठा की प्रक्रिया में अपकर्म और दुष्कर्म का व्यापक चित्रण करने में पुराणकार कभी पीछे नहीं हटा और उसने देवताओं की कुप्रवृत्तियों को भी व्यापक रूप में चित्रित किया है, लेकिन उसका मूल उद्देश्य सद्भावना का विकास और सत्य की प्रतिष्ठा ही है।

प्रस्तावित शोध का महत्व

महर्षि वेदव्यास को इन 18 पुराणों की रचना का श्रेय है। महाभारत के रचयिता भी वेदव्यास ही हैं। वेदव्यास एक व्यक्ति रहे होंगे या एक पीठ, यह प्रश्न दूसरा है और यह बात भी अलग है कि सारे प्राण कथा–कथन शैली में विकासशील रचनाएं हैं। इसलिए उनके मूल रू में परिवर्तन होता गया, लेकिन यदि ध्यानपूर्वक देखा जाए तो से सारे पुराण विश्वास की उस भूमि पर अधिष्ठित हैं जहां जाए तो ये सारे पुराण विश्वास की उस भूमि पर अधिष्ठित हैं जहां ऐतिहासिकता, भूगोल का तर्क उतना महत्त्वपूर्ण नहीं रहता जितना उसमें व्यक्त जीवन–मूल्यों का स्वरूप। यह बात दूसरी है कि जिन जीवन–मूल्यों की स्थापना उस काल में पुराण–साहित्य में की गई, वे हमारे आज के संदर्भ में कितने प्रासंगिक रह गए हैं? लेकिन साथ में यह भी कहना होगा कि धर्म और धर्म का आस्थामूलक व्यवहार किस तर्क और मूल्यवत्ता की प्रासंगिकता की अपेक्षा नहीं करता। उससे एक ऐसा आत्मविश्वास और आत्मलोक जन्म लेता है जिससे मानव का आंतरिक उत्कर्ष होता है और हम कितनी भी भौतिक और वैज्ञानिक उन्नति कर लें अंततः आस्था की तुलना में यह उन्नति अधिक देर नहीं ठहरती। इसलिए इन पुराणों का महत्त्व तर्क पर अधिक आधारित न होकर भावना और विश्वास पर आधारित है और इन्हीं अर्थों में इसका महत्त्व है।

इस पुराण में गणेश की उपासना के अनेक ऐसे सन्दर्भ मिलते हैं जिनसे ज्ञात होता है कि गणेश उपासना में जनजातीय तत्व भी कर्मकाण्ड के अंग के रूप में समाहित हो रहे थे। उदाहरणार्थ, गणेश के इक्कीस नामों के उच्चारण का उल्लेख प्राप्त होता है तथा इन्हें इक्कीस फल, इक्कीस दूर्वा (घास) के टुकड़े समर्पित करने का विधान प्रस्तुत किया गया है। इसी प्रकार विनायक चतुर्थी व्रत के अवसर पर गणेश की प्रतिमाओं को छत्र, ध्वज इत्यादि से सुसज्जित करके लोगों द्वारा खींचे जाने वाले रथ से ले जाने का जो उल्लेख प्राप्त होता है उसमें स्पष्ट रूप से सामन्ती प्रभाव दिखायी पड़ता है। जनजातीय तत्वों का पौराणिक परम्परा में समावेश, यद्यपि प्राचीन काल से ही प्रारम्भ हो चुका था परन्तु उसमें तीव्रता पूर्व मध्यकाल में ही आयी है। इसी प्रकार धार्मिक क्षेत्र में सामन्तवादी व्यवस्था के आधार पर देवताओं के स्तरीकरण तथा उनकी उपासना में ऐश्वर्य एवं प्रभुता का समावेश पूर्वमध्यकालीन देन है। इन साक्ष्यों का आंकलन करते हुये गणेश पुराण का रचनाकाल पूर्वमध्यकाल का अंतिम चरण मानना अधिक उचित है।

प्रस्तावित शोध के उद्देश्य

- गणेश पुराण के साहित्य का अध्ययन करना
- भारतीय संस्कृति में पुराणों के योगदान का अध्ययन करना
- गणेश पुराण के विभिन्न खंडो में साहित्य का अध्ययन करना
- गणेश पुराण का सांस्कृतिक अध्ययन करना

प्रस्तावित शोध का निष्कर्ष

गणेश पुराण के सांस्कृतिक अध्ययन के दौरान इस पुराण से सन्दर्भित लगभग हर महत्वपूर्ण पक्ष पर अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में यथासम्भव नवीनता एवं अनुल्लिखित पक्षों को सन्निवेशित करने की चेष्टा की गयी है। सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं दार्शनिक पटलों को सम्यक् रूप से विश्लेषित एवं समीक्षित करने का प्रयास भी किया गया है। इस अध्ययन के पूर्व गणेश पुराण का हिन्दी अनुवाद करना भी एक अनिवार्य एवं श्रमसाध्य प्रक्रिया थी। इन कार्यों को पूर्ण मान लेना तर्कसंगत नहीं होगा तथापि गणेश पुराण की तिथि निर्णय, उसका सामाजिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण, गणेश पुराण में वर्णित आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक स्थिति का पूर्व मध्यकालीन परिप्रेक्ष्य में विवेचन, गाणपत्य धर्म, दर्शन व सम्प्रदाय पर समकालीन अन्य धर्म, दर्शन के प्रभाव तथा तांत्रिक प्रभाव, गणपति

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor = 7.938, July-December 2024, Submitted in December 2024, ISSN -2393-8048

प्रतिमा–विज्ञान एवं मंदिरों का सांगोपांग विवेचन तथा इन सब विषयों की ऐतिहासिक निष्पक्षता से समालोचना करने का प्रयास किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आरसी हाजरा, : ''द गणेश पुराण '', गंगानाथ झा रिसर्च इंस्टीट्यूट का जर्नल, वॉल्यूम। 9, 1951, पीपी 79–88। डेटिंग के लिए देखें पी.97.
2. फारकुहर, जेएन, : एन आउटलाइन ऑफ द रिलिजियस लिटरेचर ऑफ इंडिया, पीपी. 226 और 270.
3. आर स्टीवेंसन, : गणेश पुराण के विश्लेषण पर गूगल बुक्स, रॉयल एशियाटिक सोसायटी के जर्नल, अनुच्छेद 16, खंड 8, पृष्ठ 319
4. बेली : 1995 पृ. 287.
5. नागेंद्र कुमार सिंह :2000 द्वारा संपादित हिंदू धर्म का विश्वकोश, पहला संस्करण, अनमोल प्रकाशन प्राइवेट द्वारा प्रकाशित। लिमिटेड, नई दिल्ली आईएसबीएन 978–81–7488–168–7 (सेट) पी. 883

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY